JREB-1-HI

यीशु: खोज जारी है - भाग १

उद्घोषक: जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी में आए, तो उन्होंने अपने चेलों से पूछा, " लोग क्या कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र कौन है?"

डा क्रेग इवांस: अगर मैं एक सांसारिक इतिहासकार होता और यीशु को बोलते देख रहा होता, तो मैं कहता कि यह व्यक्ति सोचता है कि वह स्वर्ग से आया किसी प्रकार का दूत है।

उद्घोषक: उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, दूसरे कहते हैं एलिय्याह, और कुछ अन्य यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से एक।"

डा एड्विन यामाउची: ऐसे भी कई संकेत हैं जो यीशु को साधारण इंसान की तुलना में अधिक दर्शाते हैं।

उद्घोषक: "तुम क्या कहते हो?" उन्होंने पूछा। " तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?"

डॉ डारेल बोक: मुझे लगता है कि आवाज ने यीशु को संबोधित किया: " तुम मेरे प्रिय पुत्र हो, जिससे मैं अधिक प्रसन्न हूं।"

उद्घोषक: शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "आप मसीह हैं, जीवित परमेश्वर के पुत्र।"

आज, यीशु का सवाल इतिहासकारों और धर्मशास्त्रियों, विश्वासियों और अविश्वासियों को एक जैसी चुनौती देता है।कुछ एक ने उनका स्वागत मसीह के रूप में किया, परमेश्वर के पुत्र, जैसा कि पहली सदी के उनके अनुयायियों ने किया था। दूसरे कुछ कहते हैं कि यीशु ने ना ही कुछ ऐसा कहा और किया जैसा कि सुसमाचारों में अंकित है। फिर भी, यीशु की खोज जारी है।

*****

डॉ जॉन एंकरबर्ग: आपका स्वागत है मैं हूँ जॉन एंकरबर्ग। हमने तीन महाद्वीपों की यात्रा की ताकि इतिहासकारों और पुरातत्वविदों से पूछ सकें, “क्या मसीही विश्वास के यीशु और इतिहास के यीशु एक हि है?” हम उनके बारे में क्या जान सकते हैं? हाल ही में इन सवालों ने एबीसी का ध्यान खींचा, परिणाम हुआ २ घंटे का कार्यक्रम, "द सर्च फॉर जीसस के" नाम से। पीटर जेनिंग्स ने इसे होस्ट किया। इसके प्रसारण के बाद, हमें पता चला कि कई विद्वानों ने जो कहा था, उसके बारे में दूसरी राय देना चाहते थे। दूसरी राय के बारे में तो आप जानते ही हैं। अगर आपके डॉक्टर ने आपमें किसी गंभीर बीमारी का निदान किया है, आप उस निदान पर सवाल उठाते हैं, तो आप जरूर दूसरी राय जानने में संकोच नहीं करेंगे। खैर, एबीसी विशेष में यीशु के बारे में दिए गए निष्कर्षों में से कई अनिर्णायात्मक थे, और इसलिए हमने १३ अन्य डॉक्टरों से पुछने और दूसरी राय लेने का फैसला किया। हमने एबीसी के कुछ विद्वानों से भी बात की, सिर्फ यह सुनिश्चित करने के लिए कि हमने उन्हें सही सुना।

ऐसे हि एक विद्वान हैं डॉ एन टी राइट, इन्होंने २२ वर्षों तक इंग्लैंड के ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़ाया। फिलहाल ये वेस्टमिंस्टर एबे के कैनन धर्मविज्ञानी हैं, और आज इन्हे दुनिया भर में प्रमुख ऐतिहासिक यीशु के विद्वानों में एक गिना जाता है। मैंने उनसे पूछा वे क्या सोचते हैं कि यीशु कौन थे ?

डॉ एन टी राइट: तो, यीशु कौन थे ? यीशु एक भविष्यवक्ता थे परमेश्वर के साम्राज्य की घोषणा करते, पहली शताब्दी के एक यहूदी पलिश्ती, घोषित करते हुए कि परमेश्वर राजा है। यीशु मानते थे उस राज्य को लाने वाले वे ही हैं, कि वे ही इसराइल के मसीहा है। उनका मानना था कि उन्हें अपनी पीड़ा और मौत के द्वारा ऐसा करना था और इसराइल के धर्मशास्त्र

में प्रस्तुत योग्यता की आज्ञाकारिता में भी। और उनका मानना था कि यह होने और सब करने में, वे इस्राइल के परमेश्वर के शारीरिक रूप थे जो अपने लोगों को ***छुड़ाने के लिए / उद्धार के लिए*** आए हैं।

डॉ जॉन एंकरबर्ग: डॉ राइट के निष्कर्ष और लोगों के निष्कर्ष समान नहीं थे, यीशु को लेकर ABC स्पेशल देखने के बाद। क्यों ?

हो सकता है आपने एक समाचार पत्र उठाया हो और उसमें विद्वानों के समूह की राय पढ़ी हो जिन्हें जीसस सेमिनार कहकर निर्दिष्ट किया गया। बहुत से लोगों का मानना है इस समूह की राय यीशु पर अधिकतर विद्वानों की राय दर्शाती है। हमने निर्णय किया कि हम कैनाडा, अमेरिका,यूरोप और यहां इस्राएल के विद्वानों से पूछेंगे कि वे जीसस सेमिनार के निष्कर्ष को किस तरह आंकते हैं, और उनके कहे को सुनकर आप चकित रह जाएंगे।

डॉ क्रेग इवांस: यह राय बहुत अच्छी नहीं है, अगर आसान शब्दों में कहें तो। महाद्वीपीय विद्वान जगत, या तो इन्होंने जीसस सेमिनार के विषय नहीं सुना, और यदि सुना भि है तो वे इसे हास्यास्पद मानते हुए खारिज करते हैं। ब्रिटिश विद्वान भी कुछ ऐसे ही : “जीसस सेमिनार ! अरे, शायद आप मजाक कर रहे हैं। क्या उन्हें कोई भी गंभीरता से लेता है?” यह है यूरोपीय प्रतिक्रिया। मैं शुरुआत से देख रहा हूं।

डॉ एडविन यामाउची: पीटर जेनिंग्स और अन्य जो इन मामलों की जांच करते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि विद्वानों के राय की विस्तृत श्रेणी है और जीसस सेमिनार सुसमाचार पर कट्टरपंथी दृष्टिकोण रखता है

डॉ एन टी राइट: मेरा अनुमान है कि अधिकांश ब्रिटिश, फ़्रेंच, जर्मन, बेल्जियम विद्वान आज, अगर उन्होंने यीशु सेमिनार के बारे में सुना है, तो बस यह कहेंगे, "देखिए, मै मानते हूँ ये कुछ मजाकिया अमेरिकी हैं हम हमारी विद्वत्ता के साथ आगे बढेंगे, हमे उनकी परवाह नहिं।"

डॉ जॉन एनकरबर्ग: हमारे देश के विद्वान जगत का क्या कहना है ? क्या वे सही अगुवाई दे रहे हैं ?

डॉ क्रेग इवांस: नहीं। नहीं दे रहे। वे प्रभावी होने की कोशिश करते हैं, सोसाइटी ऑफ़ बाइबिलिकल लिटरेचर में ऊँचे ओहदों पर वे स्थित हैं। मैं सोसाइटी ऑफ़ बाइबिलिकल लिटरेचर के ऐतिहासिक जीसस खंड का एक सक्रिय सदस्य हूं। तीन से चार सौ आम तौर पर उनकी सभाओं में भाग लेते हैं। यह लगभग दस गुना है जो आम तौर पर जीसस सेमिनार की सभाओं में भाग लेते हैं। और जीसस सेमिनार के लोग, जब अपने विशिष्ट विचार प्रस्तुत करते हैं जैसे नॉन-एक्स्थोलॉजीकल जीसस या अन्य सुसमाचार के लिए पतरस के सुसमाचार को प्राथमिक स्रोत के रूप में, वो विवार - अगर कठबोली में कहें तो - सीधे पानी से निकाले हुए हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: अब, अगर कोई वास्तव में जानना चाहता है कि यीशु ने २००० साल पहले इस पवित्र भूमि पर क्या कहा और क्या किया था, तो वे किन ऐतिहासिक प्रमाणों का रुख कर सकते हैं ? जैसे पीटर जेनिंग्स ने कहा, सभी विद्वान यीशु के बारे में लिखी गई सबसे पुरानी किताबों का रुख करते हैं, और वो हैं चार सुसमाचार। और यहीं से यीशु पर बहस शुरू होती है। यह सुसमाचार किस प्रकार की पुस्तकें हैं ? क्या यह भरोसेमंद है ?

डॉ क्रेग इवांस: तो, आप कहां शुरू करेंगे, आप के सबसे पुराने दस्तावेजों से, आप के सबसे पुराने और भरोसेमंद दस्तावेज। और वह हमारे पास है। हमारे पास चार सुसमाचार हैं नए नियम में।

डॉ क्लेयर पफैन: और अगर हम यीशु की ऐतिहासिकता से निपटना चाहते हैं, तो हमें अपने आप को उन साधनों में डुबोना होगा जो इसकी जांच के लिए मौजूद हैं। इनमें शामिल है सुसमाचार, साहित्यिक ग्रंथ; इनमें बाइबल के बाहर की लिखाई भी शामिल है; जोसेफस जैसे अन्य यहूदी लेखकों के लेखन। इसमें पुरातत्व और हिब्रू और यूनानी जैसे बाइबिल भाषाओं का अध्ययन शामिल है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: अब, कुछ विद्वान यह दावा करते हैं कि चारों सुसमाचार के लेखक यीशु के जुनूनी अभिनत अनुयायी थे; इसीलिए उनकी सूचना ***संदेहास्पद है / शक के दायरे में*** है ।

डॉ क्रेग ब्लोमबर्ग: प्राचीन काल में किसी ने तब तक उद्देश्य की धारणा का आविष्कार नहीं किया था, इतिहास के कालक्रमों पर उदासीन इतिहास के खातिर। वे किसी की भी कहानी को फिर से लिखने की ज़हमत नहीं उठाएंगे अगर उन्हें ना लगे कि उसमें सीखने को कुछ है

डॉ डैरेल बॉक : आप इतिहास और थेअलोजी को एक साथ देख सकते हैं। केवल शब्द "परिप्रेक्ष्य" के बारे में सोचें "थेअलोजी" के बजाय। सुसमाचार हमें परिपेक्ष देता है शिष्य व अन्य लोगो का, जो यीशु पर विश्वास करते थे उनकी कथनी और करनी के संदर्भ में।

डॉ क्रेग ब्लोमबर्ग : सिर्फ इसलिए कि उक्त व्यक्ति किसी विषय पर जुनूनीयत की हद तक विश्वास करता है इसका यह मतलब नहीं कि वह तथ्यों को ***विकृत करेगा / गलत ढंग से पेश करेगा***। कभी-कभी मामला उलटा होता है। नवयुग का एक महान उदाहरण हो सकता है नाजी

होलोकॉस्ट के कई यहूदी इतिहासकार, जो इस प्रकार के अत्याचार को दोबारा ना देखने को लेकर जुनूनीयत की हद तक प्रतिबद्ध थे। और इसी कारण के चलते, उन्होंने बड़ी सावधानी और यथार्थता से उस भयावहता को इस तरह से समझाया कि तथाकथित संशोधित इतिहासकार, अधिकतर अविश्वासी, उस भयावहता को कम प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, ऐसा नहीं किया है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: आप उस व्यक्ति से क्या कहेंगे जो संदेह कर रहा है और कहता है कि मत्ती ने मत्ती नहीं लिखा; मरकुस ने मरकुस नहीं लिखा; लूका ने लूका नहीं लिखा; और युहन्ना ने युहन्ना नहीं नहीं लिखा?

डॉ क्रेग ब्लोमबर्ग: साक्ष्यों की समग्रता जो हमें प्राचीन चर्च फादर से मिलती है यह है कि वे चार पुरूष, मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, आमतौर पर नया नियम जिनकी ओर इशारा करता है, दो प्रेरित - मत्ती और यूहन्ना, दो प्रेरितों के सहयोगी - मरकुस और लूका, वास्तव में यही वे लोग हैं जिन्होंने यीशु की कहानियां लिखीं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: पीटर जेनिंग्स ने विशेष में कहा था, “विद्वानों के बीच यह सहमति है कि सुसमाचारों के लेखक प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे।” आपकी इस पर क्या राय है ?

डॉ क्रेग इवांस: देखिए, दो सुसमाचारों के लेखक प्रत्यक्षदर्शी नहीं थे। पर इसका यह मतलब नहीं कि वे प्रत्यक्षदर्शीयों को नहीं जानते थे। पर अन्य दोनों सुसमाचारों के लेखक बहुत हद तक वही है, मत्ती और यूहन्ना। तो, फिर से, जेनिंग्स का बयान दर्शाता है मुझे लगता है एक अति आलोचनावादी दृष्टिकोण को, जिसका कुछ विद्वान समर्थन करते हैं, लेकिन सभी नहीं

डॉ जॉन एनकरबर्ग: एक और बयान उन्होंने दिया वह था, "वास्तव में सुसमाचार यीशु के मृत्यु के लगभग ४० से १०० साल बाद लिखे गए।" आप क्या मानते हैं ?

डॉ क्रेग इवांस: ४० से १०० साल। यह बहुत दूर हो गया। मैं यीशु की मृत्यु के बाद ३५ से ५० साल की अवधी मे इसे रखूंगा।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: हमने विद्वानों से बार-बार यह सुना है : अगर नए नियम का अधिकांश भाग यीशु के मृत्यु के ३५ - ५० साल के बाद लिखा गया, उसके बाद ही वे बाहर आए जब उन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी जिंदा थे। यह दर्शाता है कि विवरण सटीक ही रहे होंगे, अन्यथा वह दोनों तरफ से खारिज कर दिए गए होते, यीशु से प्रेम करने वालों और उनसे नफरत करने वालों द्वारा भी।

डॉ क्रेग ब्लोमबर्ग: और एक बात, यह केवल मसीही ही नहीं थे जो जांच रहे थे कि क्या कहा जा रहा है, अगली पीढ़ी तक भी यीशु से शत्रुता रखने वाले कई प्रत्यक्षदर्शी थे, खासकर इसराइल में, जो, अगर पहले प्रेरित जो कुछ वास्तव मे यीशु ने सिखाया और किया उससे कुछ अलग कहने की कोशिश करते, हस्तक्षेप करने और सही करने में उन्हें काफी प्रसन्नता होते, और शायद इस संचलन को खत्म करने में भि।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: हमने इन पुस्तकों की ऐतिहासिक सटीकता को लेकर सम्मानित यहूदी पुरातत्वविद डॉक्टर गैब्रिएल बारके से बात की, जिन्हें हाल ही में इसराइल में पुरातत्व के लिए सम्मानित किया गया। [मैंने पूछा] एक पुरातत्त्ववेत्ता के रूप में क्या आपको लगता है कि नए नियम के लेखकों ने वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं की बुनियाद पर ही अपनी कहानियों को लिखा, वास्तविक ऐतिहासिक चीजे जिन्हें आपने अतीत में खोजा था?

डॉ गेब्रियल बरके: जि हां,। मुझे लगता है कि सुसमाचार के अधिकांश सबूत आम युग की पहली शताब्दी की वास्तविकता को दर्शाते हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: डॉ मैगेन ब्रोशी, श्राइन आफ द बुक के पूर्व क्यूरेटर हैं, इजरायल का संग्रहालय जहाँ मृत सागर के स्क्रॉल संरक्षित हैं। ये विश्व प्रसिद्ध पुरातात्विक और विद्वान हैं, इन्होंने कुमरान कि गुफाओं की हाल की खोजों का उत्खनन भी किया है।

डॉ मैगेन ब्रोशी: मेरा मतलब, ***हालात / स्थिति*** बिल्कुल सटीक है। बिल्कुल सटीक। भूगोल सटीक है। रहने का तौर तरीका, मेरा मतलब, उन्होंने बस यूँ ही इसे गाढ़ा नहीं होगा, और उन्हें इसकी जरूरत भी नहीं थी।

डॉ क्रेग इवांस: हम वास्तव में उस जगह जा सकते हैं। यह एक वास्तविक जगह है। यह कहीं कोई मनगढ़ंत जगह नहीं। यह राजा आर्थर और उनकी गोल मेज नहीं। हम वास्तव में उस जगह जाकर कह सकते हैं, "हां यह सब कुछ यहां हुआ। दरअसल देखिए। हमने उस पगडंडी को खोद निकाला जहां वह चले थे।" इस प्रकार की चीजें पाई गई हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: सम्मानित यहूदी पुरातत्वविद् डॉ हिलेल गीवा ने १९६७ से यरूशलेम में कुछ सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक खुदाई पर काम किया है। वे इज़राइल में बाइबिल पुरातत्व पर अग्रणी हिब्रू पत्रिका के संपादक हैं।

डॉ हिलेल गीवा: नया नियम एक बहुत ही प्रामाणिक, ऐतिहासिक पुस्तक है। मेरा मतलब, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसमें इतिहास है: वास्तविक इतिहास और प्रामाणिक इतिहास इस पुस्तक में है।

डॉ मैगेन ब्रोशी : तो यह, जैसा मैंने कहा, एक ऐसा समय था जब कई प्रत्यक्षदर्शी मौजूद थे, लोग जो घटना से रूबरू हुए थे, और उसमें कोई मिथ्या नहीं है। वे कोई ऐतिहासिक उपन्यास नहीं हैं। उनमें उतनी ही सटीकता है जितनी हो सकती है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग : दरअसल, पुरातत्त्वविदों ने पुष्टि की है कि लुका इतने सटीक थे कि उन्होंने ३२ देशों, ५४ शहरों, ९ द्वीपों, कई शासकों के बारे में तथ्यों का हवाला दिया, और उन्होंने एक गलती तक भी नहीं की।

अब, अगर सुसमाचार इतिहास पर स्थापित हैं, फिर यीशु के जन्म का क्या? क्रिसमस पर, दुनिया भर के मसीही बेथलहम को उस स्थान के रूप में देखते हैं जहां वे पैदा हुए। लेकिन एबीसी विशेष के दौरान, कुछ विद्वानों ने संदेह व्यक्त किया था कि यीशु वहां कभी पैदा हुए भि थे या नहीं। तो आगे, हम इस सवाल की जांच के लिए बेतलेहेम कि यात्रा करेंगे।

*****

डॉ जॉन एनकरबर्ग: यीशु के सच्चाई की हमारी खोज हमें यरूशलेम की सुरक्षा से आधुनिक बेतलेहेम में ले आई है। हालांकि यह क्षेत्र राजनीतिक रूप से अस्थिर है और युद्ध का खतरा भी मंडराता रहता है, इसके निवासी विनम्र उत्पत्ति के हैं, बहुत कुछ २००० साल के पहले के यूसुफ और मरियम की तरह है।

हम आए हैं बेतलेहेम के चर्च ऑफ नेटिविटी में। यह यीशु का पारंपरिक जन्मस्थल है। कुछ विद्वानों का दावा है यीशु वास्तव में यहां पैदा नहीं हुए थे और हम इस पर दूसरी राय चाहते थे। कुछ कहते हैं, मत्ती के अनुसार यीशु का जन्म बेतलेहेम में हुआ, जबकि लुका के अनुसार वह नाजरेथ में जन्मे। सही कौन है?

मत्ती के सुसमाचार में, हमें बताया गया है, "... यीशु का जन्म हेरोदेस राजा के दिनों में यहूदिया के बेतलेहेम में हुआ था।" (मत्ती २:१) फिर, लुका रचित सुसमाचार में : “फिर युसूफ भी गलील से नाजरेथ के यहूदिया को गए, दाऊद के शहर को, जो कि बेतलेहेम कहलाता है, क्योंकि वे दाऊद के घराने और वंश से थे, कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थीं नाम लिखवाएं। उनके वहां रहते हुए उनके जन्मदिन के दिन पूरे हुए और वह अपना पहिलौठा पुत्र।” (लूका २:४-७) मत्ती और लूका, दोनों ने ही यीशु के जन्म को बेतलेहेम में ही बताया है।

डॉ डैरेल बॉक : मेरा मानना है वह बेतलेहेम में ही जन्मे। दरअसल, दोबारा, चलिए अगर विकल्प लें। क्या साक्ष्य हैं कि उनका जन्म नाजरेथ में हुआ ? और मेरा जवाब होगा, “मौन।” कुछ भी नहीं है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: एक विद्वान जो असहमत है वे हैं मार्कस बोर्ग, जीसस सेमिनार के संस्थापक। इनका मानना है यीशु नाजरेथ में जन्मे, क्योंकि सुसमाचारों में उन्हें “नाजरेथ का यीशु” कहा गया है।

डॉ क्लेयर पफैन: मुझे लगता है कि यह बहुत मूर्खतापूर्ण अवलोकन है। यीशु को “नाजरेथ के यीशु” कहा जाने का तथ्य हमें उनके जन्म स्थल के विषय कम बताता है बनिस्पत इसके कि अपने सेवकाई की शुरुआत के दौरान एक जवान युवा के तौर पर वे कहां से आए। यह हमें बताता है कि वे नाजरेथ के यीशु के रूप में इसलिए जाने जाते थे क्योंकि अपनी किशोरावस्था में वे वही रहा करते थे। यह हमें नहीं बताता कि उनका जन्म कहां हुआ। उनका जन्म बेतलेहेम में हि हुआ था।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: अब, पीटर जेनिंग्स ने कहा कि संसार के इस हिस्से से हमारे पास जो जानकारी है, वह मत्ती या लूका के यीशु के जन्म के बयान का समर्थन नहीं करती है। क्लेयर पफैन यहूदी जन्म प्रथाओं और यीशु के समय बेथलहम की संस्कृति पर एक विशेषज्ञ है। हमने पूछा कि क्या वे उन छिद्रान्वेषी विद्वानों से सहमत हैं जो कहते हैं कि यीशु के जन्म और प्रारंभिक वर्षों का विवरण पहली शताब्दी के यहूदी जीवन की झूठी तस्वीर प्रस्तुत करता है।

डॉ क्लेयर पफैन: मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे नहीं लगता कि सुसमाचार पवित्र भूमि में पहली शताब्दी के यहूदी जीवन की झूठी तस्वीर पेश करता है। मैं मानती हूं, खासकर लुका, विशेष रूप से हमें यहूदी जीवन के मानदंडों से अवगत कराने की कोशिश कर रहे हैं।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: हमने सम्मानित यहूदी पुरातत्वविद् डॉ मैगेन ब्रोशी से भी बात की, और उनकी सोच जानी चाही कि संसार के इस हिस्से की जानकारी सुसमाचार के लेखकों का समर्थन करते हैं या नहीं।

डॉ मैगेन ब्रोशी: कुछ चीजों पर, पहली शताब्दी के फिलिस्तीन के बारे में उनकी जानकारी काफी सटीक है। वे सटीक बैठते हैं क्योंकि वे हमें यहां क्या हो रहा था उसकी एक अच्छी तस्वीर देते हैं, और पुरातत्व इसे साबित कर सकता है।

डॉ क्रेग इवांस: अ,ब पुरातत्व यह साबित नहीं करता कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं। स्रोत या महत्वपूर्ण खोज या वह सब कुछ, उन चीज़ों को साबित नहीं करता। लेकिन यह क्या करता है यह दिखाता है कि एक ऐतिहासिक नींव है जिस पर विश्वास..... या जिसके प्रकाश में, विश्वास का अंगीकार सार्थक नजर आता है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: अब, कुछ विद्वानों का कहना है कि सुसमाचार में यीशु के कुंवारी जन्म का लेखा यूनानी और रोमी पौराणिक कथाओं से मेल खाते हैं। यह सीजर अगस्तस पर उस मिथ्या की ओर इशारा करते नजर आते हैं की उनकी मां को यूनानी और रोमी सूर्य देवता अपोलो ने गर्भवती किया था। इस बारे में बताएं।

डॉ गैरी हबर्मस: चलिए हम रहस्य धर्म या हेलेनिस्टिक धर्म की मिसाल लेते हैं, एक हेलेनिस्टिक दिव्य व्यक्ति मिसाल। ये पात्र कोई ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं हैं। वे इतिहास में कभी नहीं रहते थे। तो तुलना के लिए आधार क्या है? मुझे प्लूटार्क के शब्दों पसंद हैं, जो, आईसिस और ओसीरिस की प्रसिद्ध कहानी में कहते हैं, “अब, सुनिए, कहीं आप लोग इसे कोई ऐतिहासिक वृतांत ना समझ लेना। मैं यहां आपको कहानी बता रहा हूं!” और वह दो बार ऐसा कहते हैं। तो, मुझे लगता है यहां विषमता का दिखना महत्वपूर्ण है।

डॉ डैरेल बॉक: मुझे लगता है जब मैं कुंवारी जन्म और उसकी सरलता की तुलना करता हूं, जानते हैं : परमेश्वर मरियम के पास आते हैं और कहते हैं, तुम बच्चा जनोंगी, और वैसा होता है, और वहां पर - जेनिंग्स के उदाहरण के तर्ज पर - वहां पर सांप को रात में प्रकट होने की जरूरत ना पडी स्त्री को गर्भवती बनाने के लिए। केवल मौखिक आदेश पर यह हो गया। देखिए, यही तो है चमत्कार की सरलता जिसे बाइबिल में बडी सादगि से व्यक्त किया गया है।

डॉ एन टी राइट: मत्ती और लुका दोनों ही, यकीनन, यह जानते थे कि बाहर मूर्तिपूजक संसार में लोग कहानियां कहते हैं एलेग्जेंडर महान के विषय कि उनकी मां कुंवारी थी जब एलेग्जेंडर उनके गर्भ में था; अगस्तस के विषय, विभिन्न नायकों और देवी देवताओं के विषय। और चूंकि मत्ती और लुका दोनों ही यीशु को यहूदी धर्म की परिपूर्णता के रुप में प्रस्तुत करना चाहते थे, जिसमें इस प्रकार की कहानियां नहीं थी, ऐसा करना उनके लिए काफी खतरनाक साबित हो

सकता था। इसलिए मैंने एक इतिहासकार के रूप में खुद से यह सवाल किया, वे ऐसा क्यों करेंगे, विशेष रूप से जब इस तरह के एक बयान का स्पष्ट व्यंग्यात्मक जवाब होगा कि : "देखिए, हम जानते हैं कि मरियम के कई रूमी सैनिकों से संबंध हैं" या ऐसा कुछ भी, सच कहें तो कई मसीहीयत के शत्रुओं ने ऐसा कहा भी। इसीलिए मेरा मानना है मत्ती और लुका इस प्रकार की कहानी को तब तक शामिल नहीं करेंगे जब तक की वह पूरी तरह इस पर यकीन नहीं करते की ऐसा कुछ अजीबोगरीब हुआ है।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: सुसमाचार लेखकों की सटीकता पर सवाल उठाते हुए, पीटर जेनिंग्स ने बताया कि लुका का यीशु के जन्म का लेखा ऐतिहासिक नहीं हो सकता क्योंकि यह सवाल बरकरार है, "क्यों कर युसूफ मरियम को इतने कठिन सफर पर ले जाते हैं, नजरेथ से बेतलेहेम को, रेगिस्तान से होकर, खासकर जबकि वह गर्भवती थीं?"

डॉ क्लेयर पफैन: देखिए, इस प्रश्न में बहुत सारी गलतियां हैं, आपको नहीं लगता? शुरुआत, निश्चित रूप से, इस तथ्य के साथ कि वह गर्भवती नहीं थीं, उस समय जब उन्होंने यात्रा की। हमने लुका २ में देखा, वहां यह नहीं लिखा कि जब उन्होंने बेतलेहेम कि यात्रा की तब वह प्रसव पीड़ा में थीं, लिखा है, जब वह बेतलेहेम में थीं तब उन्हे प्रसव पीड़ा हुई : "उनके वहां रहते जनने के दिन पूरे हुए," नंबर एक। नंबर दो: नाजरेथ से बेतलेहेम की यात्रा इतनी खतरनाक नहीं है, हम देख सकते हैं शायद समूह में यात्रा करने का चलन रहा होगा। शायद तीन या चार दिन की यात्रा रही होगी। खुले आसमान के नीचे वह अपना पडाव डालते। अपना भोजन अपने साथ लाते। और वहां यात्रियों पर हमला करने के लिए डकैत भी नहीं थे। इसलिए मुझे लगता है कि हमें कुछ बुनियादी सिद्धांत मिलते हैं, और वो सिर्फ हमारे संदेह हैं व इस तथ्य की वास्तविकता से नहीं निपटते हैं कि, यदि युसूफ और मरियम उस समय एक शादीशुदा जोड़े के रूप में साथ

आ चुके थे, लंबे समय की अनुपस्थिति जानते हुए भी क्यों कर उन्हें घर पर अकेला छोड़ा जाए, जनगणना के पूरे होने के इंतजार में ?

डॉ जॉन एनकरबर्ग: कई लोगों के लिए बड़ा सवाल यह है, क्या हम कुंवारी जन्म को मान सकते हैं?

डॉ एन टी राइट: अब, यकीनन, मैं यीशु के कुंवारी जन्म को साबित तो नहीं कर सकता, और जरूर आप भी नहीं कर पाएंगे जैसे कि उनका पुनरुत्थान - पर इसके बिना आप मसीहीयत के प्रारंभ को भी साबित नहीं कर पाएंगे। तो यह मुझे खुली सोच के साथ यह कहने को विवश करता है, अगर परमेश्वर वास्तव में मसीह में होकर संसार से मेल मिलाप कर रहे थे, क्या मुझे कुछ अन्य अजीब चीज़ों की भी उम्मीद नहीं करनी चाहिए? और जब मेरे पास ये कहानियां हैं जो इतनी अजीब लगती हैं और फिर भी, वे ऐसा क्यों करेंगे? - शायद यह वास्तव में हुआ हो। क्योंकि देखिए, जहां तक मैं जानता हूं, यहूदी मत में कोई नहीं कह रहा था, " ओह ! यशायाह ७:१४ - मसीहा का जन्म कुंवारी द्वारा ही होगा।" मुझे नहीं लगता वहां कोई भी इस वचन का हवाला दे रहा था। इसीलिए मत्ती को कोई जरूरत नहीं थी कि वह इस वचन को लें और इसे यीशु के साथ जोड़कर प्रस्तुत करें। मुझे शक है मत्ती इसके ज़िक्र के बिना ही ज्यादा खुश होते। पर यहां हालात कुछ और थे उनके सामने यह स्थिति थी और वे चाहते थे कि इसके नियमित पुराने नियम से वे कुछ पा सकें। और वैसे ही, लुका, उनके पास स्वर्गदूतों और चरवाहों की कहानियां नहीं थी जिसे वे यीशु के साथ जोड कर दिखाना चाहते थे; बल्कि, उन्हें इस सच्चाई ***के साथ कार्य करना था / को प्रस्तुत करना था***।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: यीशु के जन्म के पश्चात, सुसमाचारों में हम पाते हैं कि वह नाजरेथ नामक एक छोटे नगर में पले-बढ़े। पर, हम उनके बचपन और उनके माता-पिता, यूसुफ और मरियम के साथ उनके रिश्ते के बारे में क्या जानते हैं?

डॉ क्लेयर पफैन: जब वे 12 साल के थे और मंदिर गए थे, लुका हमें एक शानदार कहानी बताते हैं। मंदिर में बैठ कर वे बुजुर्गों और रब्बीयों और फरीसियों से बात करते हैं, और उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह बालक बेहद प्रभावशाली है, ऐसा बच्चा जिसे किसी अच्छे विद्यालय में दाखिला मिलना चाहिए, नियमों का अच्छा ज्ञान दिया जाना चाहिए। लेकिन, ज़ाहिर है, यीशु के सांसारिक माता-पिता, मरियम और यूसुफ कहते हैं, "बिल्कुल नहीं! तुम हमारे साथ घर चल रहे हो। तुम इस छोटे नगर नाज़रेथ में रहते हो। यहां तुम व्यवसाय सीखोगे और परिवार का पालन पोषण करोगे।" और यीशु ने आज्ञाकारिता में ऐसा किया। उन्होंने नाज़रेथ रुपी कक्षा के लिए रब्बीनिक विध्याओं कि कक्षा का व्यापार किया। और वहां उन्होंने देखा, चरवाहों और भेड़ों को, मैदान में किसानों को, पिता को अपने बच्चों के साथ, और जब वह इन प्राकृतिक जीवन की घटनाओं को देख रहे थे, वह विचारने लगे कि कैसे ये परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों को व्यक्त करते हैं, कैसे उन्होंने पिता रुपी परमेश्वर के चरित्र को व्यक्त किया। और फिर जब परमेश्वर ने बपतिस्मा के बाद उन्हें मसीहा के रूप में भेजा, वे दैनिक जीवन के लोगों से उस भाषा में बात करने को तैयार थे जिसे वे परमेश्वर के चरित्र के बारे में समझते हों। वे आम लोग अकादमियों की भाषा नहीं बोलते थे; ना हि महान हलाका या मौखिक परंपरा की भाषा। वे समझते थे एक स्त्री का सिक्का खो जाने के मायने को, वे समझते थे एक उड़ाव पुत्र को पिता द्वारा माफ करने के मायने को। और वे यीशु कि शिक्षा और दृष्टांतों के माध्यम से व्यक्त पिता के प्यार को समझ और स्वीकार कर सके।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: नाज़रेथ में बढ़ते समय, वहाँ से केवल चार मील दूर, यीशु सेफोरिस नामक एक शहर देख सकते थे, जो हेरोद एंटिपस की राजधानी थी। उन्हे और उनके पिता यूसुफ को वहां बढ़ई के काम के लिए हो सकता है किराए पर लिया गया हो। यीशु जानते थे रोमी उनके साथी यहूदियों को भारी कर द्वारा बोझिल कर रहें हैं, और वे गरीबों और अमीरों के बीच के गहरे अंतर को देख पा रहे थे। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इन्ही शुरुआती अनुभव ने यीशु को राजनीतिक क्रांतिकारी या क्रोध ऋषि बना दिया।

डॉ बेन विथिंगटन: तथ्य यह है कि नाज़रेथ सेफोरिस के बिल्कुल करीब था, जहां हाल ही में पुरातात्विक खुदाई हुई और बहुत सारी रोचक चीजें सामने आई हैं, अब यह एक सवाल है इसे हमें समझने की जरूरत है। एक व्यक्ति कौन है यह निर्धारित करने में निकटता कितना बड़ा मुद्दा है? मेरा मतलब, मैं ब्रुकलिन जा सकता हूं और हसीदिक यहूदियों के बिल्कुल बगल वाले दरवाजे पर सुदूर पूर्व से बौद्धों को रहता ढूंढ सकता हूं। वे एक दूसरे के बेहद निकट रहते हैं - लेकिन इससे क्या? इससे उनकी वैश्वासिक प्रणालियां बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुई है। यीशु का नाजरेथ से एक बढ़ई होने का तथ्य किसी भी सूरत में यह संकेत नहीं देता कि वे सेफोरिस से एक ग्रीको-रोमन व्यक्ति है। न ही यह दर्शाता है कि वे गमाला से उन लोगों में से कुछ की तरह एक क्रांतिकारी है। आप अलग-अलग प्रकार के व्यक्तियों को एक साथ निकटतम परिधि में रहते पा सकते हैं। पर ववैश्वासिक प्रणालियां बिल्कुल अलग हैं।

डॉ डैरेल बॉक: उन्हें यकीनन समाज के पीड़ित वर्ग की परवाह थी, दरकिनार किया गए लोगो कि। पर, जानते हैं, रोम मुख्य शत्रु नहीं था। बड़े शत्रु थे, वह आत्मिक शक्तियां जो लोगों के भीतर और उनके द्वारा कार्यरत थे, आप कह सकते हैं, लोगों के पीछे भी, जो कारण बना लोगों के एक दूसरे का फायदा उठाने का। और, कई मायनों में उनके संदेश ने उस युद्ध और उस

राज्य को छूने की कोशिश की, अगर आप कहना चाहें, रोमी तो सिर्फ नुमाइश का एक बहाना था।

डॉ जॉन एनकरबर्ग: विद्वानों का मानना है यीशु की सार्वजनिक सेवकाई कम से कम एक साल और ज्यादा से ज्यादा तीन या चार साल तक हो सकती है। अगर यह सही है, तो इतने कम समय में यीशु ने ऐसा क्या कह दिया जो पूरे संसार मे इतना ज़बर्दस्त बदलाव ला देता है? देखेंगे अगले भाग में।

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्न् द्यद्द ठ्ठड़ड़्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्द्दध्र्.द्दद्धढ़

@JAshow.org

क्द्दद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य **2001** ऋड्ढक्ष्